'ऐ साठ साल वालो!' हिसाब की तरफ़ मुतावज्जोह हो जाओ। तुमने अपने लिए क्या आगे भेजा और कौन से अमल किए?।

'ऐ सत्तर साल की उम्र वालो!' काश मख़्लूक़ात पैदा न की जाती और काश वह पैदा कर दी गई, तो यह भी जान लेती कि किस लिए पैदा की गई है?!

(दैलमी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नें फ़रमाया जनाज़े के साथ चलते हुए फ़रिश्ते यह कहते हैं कि पाक है वह ज़ात, जो नज़र नहीं आती और अपने बंदों पर मौत के ज़रिए क़हार है।

(तारीखे रफ़ाई)

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सफ़र में जो शख़्स दुन्यावी बातों से अपना दिल हटाकर, अल्लाह की तरफ़ अपना ध्यान रखता है, तो एक फ़रिश्ता उसके साथ हो जाता है।

(तबरानी)

हज़रत यज़ीद बिन शिजरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स अल्लाह के रास्ते में शहीद किया जाता है, तो खून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरते ही, दो मोटी आंखों वाली सजी हुई हूरें आसमान से उतरकर उसके पास आती है और उसके चेहरे से धूल-मिट्टी साफ़ करती है।

(हाकिम, 3, 394)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो मुसाफ़िर सफ़र में फ़िज़ूल बातों और फ़िज़ूल कामों में लगा रहता है, तो शैतान भी उसके साथ हो जाता है।

(हिस्ने हसीन)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की ख़ास मदद, जमाअत के साथ होती है लिहाज़ा जो शख़्स जमाअत से अलग हो जाता है, शैतान उसके साथ रहकर उसको उकसाता

है।

(नसाई)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, शैतान अकेले आदमी और दो हो जाने पर भी नुक़सान पहुंचाता है लेकिन तीन आदमियों को नुक़सान नहीं पहुंचा पाता है क्योंकि तीन की जमाअत होती है।

(बज़्ज़ार)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मस्जिद में दाख़िल होकर–

"أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"

जब कोई दुआ पढ़ता है, तो शैतान कहता है यह शख़्स मुझसे पूरे दिन के लिए महफ़ूज़ हो गया।

(अबू दाऊद)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बकरियों के भेड़ की तरह, शैतान इंसान का भेड़िया है। भेड़िया, हर उस बकरी को पकड़ लेता है, जो रेवड़ से अलग–थलग हो। इसलिए अलग–अलग ठहरने से बचो, इज्तिमाइयत को आम लोगों के बीच रहने को और मस्जिद को लाज़िम पकड़ो।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, इंसान तक रोज़ी पहुंचाने के लिए फ़रिश्ते तैय हैं अल्लाह तआला ने उनको हुक्म फ़रमा रखा है, कि जिस आदमी को तुम इस हालत में पाओ, जिसने (इस्लाम) को ही अपना ओढ़ना बिछौना बना रखा है, तो तुम उसको आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ मुहय्या कर दो और दीगर इंसानों को भी रोज़ी पहुंचा दो। यह दीगर लोग अपने मुक़द्दर से ज़्यादा रोज़ी न पा सकेंगे।

(अबू उवाना)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, फ़रिश्तों की एक ऐसी जमाअत है जो रास्तों में अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले की तलाश में घूमती रहती है, जब वह किसी ऐसी जमाअत को पा लेती है, जो अल्लाह के ज़िक्र में मसरूफ़ होती है। तो वह एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं कि आओ! यहां तुम्हारी मतलूबा चीज़ है। इसके बाद वे सब फ़रिश्ते मिलकर, आसमान तक अपने परों से उनको घेर लेते हैं।

(बुख़ारी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने रमी जुमेरात पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है, जो कंकरी मक़बूल हो जाती है, उसको उठा लेता है।

(तारीखे मक्का इमाम अज़रकी)

दुनिया की मुशक़्क़तों से राहत

हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह तआला मलाकुल मौत से फ़रमाता हैं, कि मेरे फ़लां बंदे के पास जाओ और उसकी रूह निकाल ले आओ! मैंने ख़ुशी और ग़म के हालात में इसका इम्तिहान ले लिया है, वह ऐसा ही निकला जैसा कि मैं चाहता था। इसको ले आओ! ताकि दुनिया की मुशक़्क़तों से उसे राहत मिल जाए।

मलाकुल मौत पांच सौ (500) फ़रिश्तों की जमाअत के साथ इसके पास जाते हैं, उन सब के पास जन्नत के कफ़न होते हैं, उनके हाथों में रिहान के गुलदस्ते होते हैं, जिसमें बीस–बीस रंग के फूल होते हैं और हर फूल की ख़ुशबू अलग होती है और एक रेशमी रूमाल में महकता हुआ मुश्क होता है।

मलाकुल मौत उसके सर के पास और बाक़ी फ़रिश्ते उसको चारों तरफ़ से घेर लेते हैं, फिर मुश्क वाला रूमाल, उसकी थोड़ी के नीचे रखते हैं, जन्नत का दरवाज़ा उसके सामने खोल दिया जाता है। कभी सजी हुई हूरें उसके सामने आती

हैं। तो कभी वहां की नहरें और बाग़ात।

इन सबको देखकर इसकी रूह ख़ुशी से जिस्म से बाहर निकलने के लिए बेकरार हो जाती है, मलाकुल मौत उससे कहते हैं, कि ऐ मुबारक रूह! चल ऐसी बेरियों को तरफ़ जिसमें कांटा नहीं है और कीलों की तरफ़, जो तले और ऊपर लगे हुए हैं मलाकुल मौत उससे ऐसी नर्मी से बात करते हैं जिस तरह मां अपने छोटे बच्चे से करती है।

फिर उसकी रूह बदन में से ऐसे निकलती है, जैसे कि आटे में से बाल। जब रूह बदन से निकलती है, तो सब फ़रिश्ते उसको सलाम करते हैं और जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं। पस जिस वक़्त रूह बदन से निकलती है, तो वह बदन से कहती है, कि अल्लाह तुझे जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए, कि तू मुहताजगी के साथ अल्लाह तआला का कहना मानने में जल्दी करता था, उसकी नाफ़रमानी करने में सुस्ती करने वाला था, तूझे आज का दिन मुबारक हो! तुमने ख़ुद भी अज़ाब से निजात पाई और मुझे भी निजात दिला दी और यही बात, बदन, रूह से कहता है।

इसकी जुदाई पर ज़मीन के वे हिस्से रोते हैं, जिस ज़मीन के हिस्सों पर वह अल्लाह का कहना मानते हुए चलता था, आसमान के वह दरवाज़े रोते हैं, जिनसे उसके अमल ऊपर जाया करते थे और जिससे उसका रिज़्क़ उतरा करता था।

जब मलाकुल मौत उसकी रूह को लेकर आसमान पर जाते हैं, तो वहां हज़रत जिब्रील अलै० सत्तर हज़ार (70,000) फ़रिश्तों के साथ इसका इस्तिक़बाल करते हैं, ये फ़रिश्ते अल्लाह की तरफ़ से उसे ख़ुशख़बरी सुनाते हैं, फिर आसमानों पर होते हुए जब उसे लेकर अर्श पर पहुंचते हैं, तो वह अर्श पर पहुंचकर सज्दे में गिर जाते हैं। फिर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि उसे अलीय्यीन में पहुंचा दो और यहां ज़मीन पर पांच सौ (500) फ़रिश्ते उसके जिस्म के पास जमा हो जाते हैं, जब नहलाने वाले उसके जिस्म को करवट देते हैं, तो यह फ़रिश्ते भी उसे करवट देने लगते हैं और जब वह कफ़न पहनाने लगते हैं, तो फ़रिश्ते उनके कफ़न से पहले अपने साथ लिए हुए कफ़न को पहना देते हैं, इसी तरह जब ख़ुशबू लगाते हैं, तो उनसे पहले ही फ़रिश्ते अपने साथ लाई हुई ख़ुशबू उसके बदन पर मल देते हैं।

फिर जब जनाज़ा घर से बाहर लाया जाता था, तो उसके घर के दरवाज़े से लेकर क़ब्रस्तान तक रास्ते के दोनों तरफ़ फ़रिश्ते क़तार (लाइन) लगाकर खड़े हो जाते हैं और उसके जनाज़े को, दुआ व इस्तिग़फ़ार के साथ इस्तक़बाल करते हैं।

ये सारे मंज़र देखकर, शैतान इतनी ज़ोर–ज़ोर से रोने लगता है, कि उसकी हड्डियां टूटने लगती हैं और अपने लश्करों से कहता है, कि तुम्हारा नास हो जाए, आख़िर यह तुमसे किस तरह छूट गया? वे कहते हैं, कि मासूम था। उधर क़ब्र में जब उसकी रूह जिस्म में डाली जाती है, तो

नमाज़ उसकी दाहिनी तरफ़,
रोज़ा उसकी बाहिनी तरफ़,
ज़िक्र और तिलावत उसके सर की तरफ़,
और बाक़ी आमाल पांव की तरफ़,

आकर खड़े हो जाते हैं, फिर अज़ाब उसकी क़ब्र में अपनी गर्दन निकालकर उस तक पहुंचना चाहता है, लेकिन हर तरफ़ से उसे घेरा हुआ पाकर अज़ाब वापस चला जाता है।

इसके बाद उसकी क़ब्र में दो फ़रिश्ते आते हैं, जिनकी आंखे बिजली की तरह चमक रही होती हैं और उनकी आवाज़ बादलों की गरज की तरह होती है, उनके मुंह वाली सांसों के साथ आग की लपट निकलती है, बालों की लम्बाई उनके पैर तक होती है, मेरहबानी और नर्मी ये दोनों जानते ही नहीं, उनको 'मुन्कर नकीर' कहा जाता है, इन दोनों के हाथ में एक इतना बड़ा और वज़नदार हथौड़ा होता है, कि उसे सारे मीना के रहने वाले मिलकर उठाना चाहें, तब भी उठा नहीं सकते। फिर वह उस इंसान से कहता है, कि बैठ जा, तो वह फ़ौरन उठकर बैठ जाता है, फिर वह उससे पूछते हैं, कि–

(ज़रूरतों को पूरा करने वाला कौन है?)
(ज़रूरतों को पूरा करने का तरीक़ा क्या है?)
(उनकी ख़बरें किसने दी थी?)

तो ये तीनों सवालों के जवाब में कहता है, कि

1. मेरा रब अल्लाह है।

2. मेरा दीन इस्लाम है।

3. मेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

जवाब सुनकर ये दोनों फ़रिश्ते कहते हैं कि तुमने सच कहा। इसके बाद वह क़ब्र की दीवारों को सब तरफ़ से हटा देते हैं, जिससे वह क़ब्र चारों तरफ़ फैल जाती है।

इसके बाद वह कहते हैं, कि ऊपर सर उठाओ! जब वह इंसान अपना सर उठाता है, तो उसको एक खुला हुआ दरवाज़ा नज़र आता है, जिसमें जन्नत के अंदर का नज़ारा नज़र आता है। वह कहते हैं कि ऐ अल्लाह के दोस्त! वह जगह तुम्हारे रहने की है, इस वजह से कि तुमने अल्लाह का कहना माना है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, उसको उस वक़्त इतनी ख़ुशी होती है, कि जो उसे कभी न लौटेगी। उसके बाद फ़रिश्ते कहते हैं कि अपने पांव की तरफ़ देखो, जब अपने पावं की तरफ़ देखता है, तो उसके जहन्नम का एक दरवाज़ा नज़र आता है, वे फ़रिश्ते कहते हैं, कि ऐ अल्लाह के दोस्त! कि तुमने इस दरवाज़े से निजात पा ली, उस वक़्त भी उसे उतनी ही ख़ुशी होती है जो उसे कभी न लौटेगी।

उसके बाद उसकी क़ब्र में सत्तर (70) दरवाज़े जन्नत की तरफ़ खुल जाते हैं, जिनमें से वहां की ठंडी हवाएं और खुशबूएं आती रहती हैं और क़ियामत तक ऐसा ही होता रहेगा।

बे ईमान की मौत का मंज़र

इसी तरह जब किसी बे-ईमान के लिए अल्लाह तआला मलाकुल मौत से फ़रमाते हैं, कि मेरे दुश्मन के पास जाओ और उसकी रूह निकाल लाओ, मैंने ... पर हर क़िस्म की फ़राग़ी दी, अपनी नेमतें उस पर लाद दी, मगर वह मेरी

नाफ़रमानी से बाज़ न आया, लाओ आज उसको सज़ा दूं।

तो मलाकुल मौत निहायत तक्लीफ़ दे सूरत में उसके पास आते हैं। उनके चेहरों पर 12 आंखें होती हैं, उनके पास जहन्नम के आग का एक गुरज (डंडा) होता है जिसमें कांटे होते हैं, उनके साथ 500 फ़रिश्तों की जमाअत होती है, जिनके साथ में आग के अंगारे और आग के कोड़े होते हैं, मलाकुल मौत आते ही उसे गुरज से मारते हैं और जिसकी वजह से गुरज के कांटे उसकी रग–रग में घुस जाते हैं, और बाक़ी फ़रिश्ते उसके मुंह और सुरीन पर कोड़े मारना शुरू करते हैं।

फिर उसकी रूह पांव की उंगलियों से निकालना शुरू करते हैं। रोक रोककर उसकी रूह निकाली जाती है, ताकि तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ हो, फिर जहन्नम की आग के अंगारे उसकी पीठ के नीचे रखते हैं और मलाकुल मौत उससे कहते हैं, कि 'ऐ मलऊन रूह निकल! इस जहन्नम की तरफ़ चल, जिसके बारे में अल्लाह तआला ने खबरें भिजवाई थीं।

फिर जब उसकी रूह, बदन से रूख़्सत होती है, तो वह बदन से कहती है कि अल्लाह तआला तुझे बुरा बदला दें, तू मुझे अल्लाह की ना–फ़रमानी में जल्दी से ले जाता था और उसका कहना मानने में आना–कानी करता था, आज तू खुद भी हलाक हुआ और मुझे भी हलाक किया और यही मज़्मून बदन, रूह से कहता है।

ज़मीन के वे हिस्से जिन पर अल्लाह की ना–फ़रमानी करते हुए यह चलता था। वह इस पर लानत करते हैं और शैतान के लश्कर दौड़े–दौड़े अपने सरदार इबलीस के पास पहुंचकर उसे ख़ुशख़बरी सुनाते हैं, कि एक आदमी को जहन्नम पहुंचा दिया।

फिर जब बर्ज़ख़ में पहुंचता है तो वहां की ज़मीन उस पर इतनी तंग हो जाती है कि उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं, और उस पर काले सांप मुसल्लत हो जाते हैं, जो उसकी नाक और पांव के अंगूठे से काटना शुरू करते हैं और दर्मियान में दोनों सांप आकर मिलते हैं। फिर उसके पास मुन्कर नकीर आते हैं और उससे पूछते हैं, कि

तेरा रब कौन है?

तेरा दीन क्या है?

तेरा नबी कौन है?

वह हर सवाल के जवाब में ला इल्मी ज़ाहिर करता है, उसके जवाब न देने पर इतने ज़ोर से उसे गरज (डंडा) से मारा जाता है, कि उस गरज की चिंगारियां क़ब्र में फैल जाती है। इसके बाद उससे कहा जाता है ऊपर देख, तो वह ऊपर की तरफ़ जन्नत का दरवाज़ा खुला हुआ देखता है, वे फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! अगर तू अल्लाह का फरमांबरदार बनकर रहता, तो तेरा यह ठिकाना होता।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है उसको उस वक़्त ऐसी हसरत होती है, ऐसी हसरत कभी न होगी, फिर जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाता है और वे फ़रिश्ते कहते हैं, कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! अब तेरा यह ठिकाना है। इसलिए कि तुमने अल्लाह की नाफ़रमानी की। इसके बाद जहन्नम के सत्तर दरवाज़े उसकी क़ब्र में खोल दिए जाते हैं, जिनमें से क़ियामत तक गर्म हवाएं और धुआं वग़ैरह आता रहता है।

(किताबुल जनाइज़)

अंबिया अलैहिस्सलाम की ग़ैबी मददों के वाक़िआत

(नोटः क़ुरआन की आयतों के तर्जुमें बिल्कुल लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ नहीं हैं)

एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक आदमी ने आकर पूछा, कि ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या कभी आपके लिए आसमान से खाना आया है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हां एक मर्तबा एक देगची में गर्म गर्म खाना आसमान से उतरा था।

उसने पूछा कि क्या आपने उसमें से खाया था?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हां, मैंने खाया था।

उसने पूछा कि क्या आपके खाने के बाद उसमें खाना कुछ बचा भी था?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हां हमारे खाने के बाद उसमें कुछ खाना बच भी गया था।

उसने पूछा, कि फिर उस बचे हुए खाने का क्या हुआ?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह देगची आसमान की तरफ़ ऊपर चली गई। लेकिन जब वह देगची ऊपर जा रही थी, तो उसमें से यह आवाज़ आ रही थी कि मैं आप लोगों में थोड़ा वक़्त ही रहूंगी। क्योंकि अलग-अलग जमाअतें बनाएंगे और फिर एक-दूसरे को क़त्ल करेंगे और क़ियामत से पहले बहुत ज़्यादा मौतें होने लगेंगे। फिर ज़मीन पर ख़ूब ज़्यादा ज़लज़ले आएंगे।

(हाकिम, 4, 1447—असाबा 2, 6, 8)

﴿فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾

हज़रत मरयम के लिए हज़रत ज़िक्रया अलै० ने मस्जिदे अक़्सा में एक हुजरा बनवाया था जिसमें दिनभर वह रहती थी और हर रोज़ शाम को उनके ख़ालू हज़रत ज़िक्रया अलै० उन्हें अपने साथ अपने घर ले जाते थे, जहां वह अपनी ख़ाला के साथ रात गुज़ारती थी। सुबह फिर ज़िक्रया अलै० हुज्रे में छोड़ दिया करते थे इस हुज्रे के क़रीब किसी मर्द या औरत का आना मना था। ख़ुद हज़रत ज़िक्रया भी शाम को उन्हें बाहर से आवाज़ देते तो वह बाहर आ जाती थी। एक दिन हज़रत ज़िक्रया अलै० हुज्रे के अंदर चले गए, तो अंदर जाकर देखा कि हुज्रे में हर क़िस्म के बे-मौसम फल रखे थे।

तो बड़े ताज्जुब से मरयम से पूछा कि ऐ मरयम! ये फल कहां से आए? मरयम ने फ़रमाया कि ऐ मेरे ख़ालू जान! ये फल तो रोज़ मेरे अल्लाह मुझे आसमानों से भेजकर खिलाते हैं।

(सूर आले इम्रान)

﴿هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ
الدُّعَاءِ فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا
بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ﴾

इस पर ज़िक्रिया ने यह दुआ कि ऐ अल्लाह! जब आप बग़ैर पेड़ के बग़ैर मौसम के फल दे सकते हैं, तो क्या मुझे इस उम्र में एक औलाद नहीं दे सकते?! ऐ अल्लाह! मुझे एक औलाद अता फ़रमा। उसी वक़्त उनको यह बशारत हुई कि तुम्हें औलाद मिलेगी और उसका नाम यहया रखना।

(सूरः आले इमरान 38,39)

﴿إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَن يُنَزِّلَ عَلَيْنَا
مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ قَالُوا نُرِيدُ أَن نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ
قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَن قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ
رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِّنكَ وَارْزُقْنَا وَأَنتَ
خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَن يَكْفُرْ بَعْدُ مِنكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَّا
أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ﴾

हज़रत ईसा अलै० के लिए चालीस दिन तक आसमान से एक ख़्वान उतरता था। जिसमें रोटी और मछली का सालन होता था, यह खाना 'मायदा' के नाम से मशहूर हुआ।

(सूरः मायदा, 112–114)

﴿وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ
وَلَٰكِن شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ
وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا﴾ .

अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै० को इसी इंसानी जिस्म के साथ आज से तकरीबन 2000 हज़ार साल पहले ज़िंदा आसमानों के ऊपर उठा लिया।?

(सूर निसा, 157–158)

और कियामत आने से पहले दज्जाल को कत्ल करने के लिए हज़रत ईसा अलै० को फिर ज़मीन पर उतारा जाएगा, कि सुर्ख जोड़े में दो फ़रिश्तों के परों पर हाथ रखे हुए दमिश्क की जामा मस्जिद की मीनार पर सुबह फजर की नमाज़ के वक्त उनका उतरना होगा।

(बुखारी व मुस्लिम)

﴿وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا، قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ، كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ﴾

हज़रत मूसा अलै० जब अपनी कौम बनी इसारल को लेकर दरिय–ए–नील के पार पहुंच गए तो मैदाने तिया में उनकी कौम ने पीने के पानी की हाजत बताई तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि पत्थर की चट्टान पर लाठी मारो। मूसा अलै० ने पत्थर की चट्टान पर लाठी मारी, तो चट्टान से 12 चश्में जारी हो गए, जिससे बनी इसराइल के 12 कबीले, एक–एक चश्मे से अपनी–अपनी ज़रूरत का पानी लेने लगे।

(सूर बकर: 60)

﴿وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ، كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ﴾

फिर इन लोगों ने मूसा अलै० के सामने भूख की हाजत पेश की, तो अल्लाह ने उनके लिए भूनी हुई बटेरें आसमान से उतारीं, उसे खाकर ये लोग सो गए। जब ये लोग सुबह सोकर उठे तो, घास और झाड़ियों की पत्तियों पर उन्हें सफ़ेद ओले की तरह कोई चीज़ बिछी हुई नज़र आई, जब उसको खाया तो उन्हें पता चला कि यह तो हलवा है।

फिर दोपहर के वक़्त जब सूरज सर पर आया, तो सूरज की गर्मी से बचने के लिए उस मैदान में उन्हें कोई पेड़ वग़ैरह नज़र न आया, गर्मी से ये परेशान हुए तो मूसा अलै० से उसकी शिकायत की। उसी वक़्त अल्लाह ने बादल के टुकड़े भेजे, जो हर क़बीलों के सरों के ऊपर सूरज के बीच आड़ बन गए।

इसी तरह चालीस साल तक ये लोग उसी-मैदान में रहे। हर रोज़ शाम के वक़्त बटेर और सुबह के वक़्त हलवा और दोपहर के वक़्त बादल से ये लोग फ़ायदा उठाते रहे। बग़ैर कमाए अल्लाह ने उनकी हाजत को अपनी क़ुदरत से पूरा किया।

(सूरः बक़र, 57)

﴿وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَامُوسَىٰ قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّأُ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ قَالَ أَلْقِهَا يَامُوسَىٰ فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ﴾

हज़रत मूसा अलै० से अल्लाह तआला ने जब पूछा कि ऐ मूसा अलै० तुम्हारे हाथ में क्या है? मूसा अलै० ने जवाब दिया कि लाठी है। फिर अल्लाह तआला ने उनसे कहा, कि यह लाठी ज़मीन पर डाल दो, जब मूसा अलै० ने उस लाठी को ज़मीन पर डाला, तो अल्लाह तआला ने उसे सांप में बदल दिया।

अब अल्लाह तआला ने मूसा अलै० से कहा, कि इसे पकड़ लो, जैसे ही मूसा अलै० ने सांप को पकड़ा, वह फिर लाठी बन गया।

(सूरः ताहा, 19-29)

﴿وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ﴾

जब हज़रत यूनुस अलै० नाव पर बैठकर नदी पार कर रहे थे और नाव भवर (तूफ़ान) में फंसी तो सारे लोगों ने यह बात तैय की, कि आदमी ज़्यादा होने की

वजह से नाव फंसी हुई है, अगर इसमें कोई एक आदमी नाव से कूद जाए, तो सारे आदमी डूबने से बच जाएंगे।

इस बात पर यूनुस अलै० बोले कि मैं इसके लिए तैयार हूं। लोगों ने कहा, आप रहने दीजिए, फिर नाम लिखकर पर्ची डाली गई, कि जिसका नाम निकलेगा, वह पानी में कूदेगा, और अगर वह खुशी से नहीं कूदेगा, तो हम लोग उसको पानी में फेंक देंगे, सब लोग इस बात पर तैयार हो गए, तो जब पर्ची डाली गई तो उसमें यूनुस अलै० का नाम निकला, तो यूनुस अलै० ने अपने ऊपर के कपड़े उतारकर नाव में रखे और दरिया में कूद गए। जैसे ही यह कूदे तो एक बड़ी मछली ने उनको अपने पेट में निगल लिया। चालीस दिन तक यह मछली के पेट में रहे। फिर वहीं से उन्होंने दुआ की, तो मछली ने पानी के ऊपर आकर रेत पर उन्हें उगल दिया।

(सूरः सफ़्फ़ात, 139–146)

क़ौमे समूद ने हज़रत सालेह अलै० से अल्लाह पर ईमान लाने के लिए शर्त रखी, कि अगर तुम्हारा रब पहाड़ से एक हामिला ऊंटनी पैदा कर दे, तो हम लोग तुम्हें नबी मान लेंगे। जिस पर हज़रत सालेह अलै० ने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने पहाड़ को फाड़कर उसके अंदर से एक हामिला ऊंटनी पैदा कर दी, पहाड़ से बाहर आते ही उस ऊंटनी से एक बच्चा पैदा हुआ।

(क़ससुल अंबिया)

﴿وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ فَقَالَ إِنِّيٓ أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ رُدُّوهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ﴾

एक बार हज़रत सुलैमान अलै० ने घोड़ों का मुआएना कर रहे थे, उनके मुआएना करने में इतना मश्ग़ूल हो गए, कि असर की नमाज़ क़ज़ा हो गई। उनको जब नमाज़ का ख़्याल आया तो सूरज ग़रूब हो चुका था, तो उन्होंने अल्लाह से दुआ की तो सूरज वापस आ गया, सूरज के वापस आने पर उन्होंने असर की

नमाज़ पढ़ी।

(सूरः साद, 30-33)

﴿وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ ـــــ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ﴾

हज़रत दाऊद अलै० को अल्लाह ने लोहे की जिरहा बनाने का हुक्म दिया, हज़रत दाऊद जब लोहे को अपने हाथ में पकड़े तो लोहा उनके हाथ में आते ही मोम हो जाता था।

(सूरः सबा, 10, 11)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा हम लोगों पर) बादल ने साया किया, तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की, जिस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो फ़रिश्ता बादलों को चलाता है, वह अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वह उस बादल को यमन की वादी की तरफ़ ले जा रहा है, जहां "ज़रा" नाम की जगह पर उसका पानी बरसेगा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अय्यूब अलै० को जब अल्लाह तआला ने बीमारी से शिफ़ा दी तो यह अपनी बीवी के साथ अपने घर वापस होने लगे, तो इनके साथ रोज़ानाः के खाने का जो सामान था, जिसमें एक बोरी में गेहूं था, और एक बोरी में जौ था, अल्लाह तआला ने उनके गेहूं को सोने का और जौ को चांदी का बना दिया।

(कससुल अंबिया)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत अय्यूब गुस्ल फ़रमा रहे थे, कि अल्लाह तआला सोने की टिड्डियां उन पर बरसाई तो हज़रत अय्यूब ने उन सोने की टिड्डियों को देखा तो मुठ्ठी भर-भरकर कपड़े में रखने लगे, उस पर अल्लाह तआला ने उनसे कहाः कि क्या हमने तुमको ग़नी नहीं बना दिया है? जो तुम उनको उठा रहे हो? जिस पर हज़रत अय्यूब अलै० ने अर्ज़ किया, ऐ परवरदिगार! आपकी नेमतों और बरकतों से कब कोई बे-परवाह हो सकता है।

"وَلٰكِنْ لَا غِنٰى عَنْ بَرَكَتِكَ"

(सही बुखारी)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सुलैह हुदैबिया के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम प्याले से पानी लेकर वुज़ू कर रहे थे, कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निगाह पास आए हुए सहाबा रज़ि० पर पड़ी, सबके चेहरे पर परेशानी नज़र आ रही थी, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से पूछा क्या बात हो गई है?

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम लोगों के पास न वुज़ू के लिए पानी है और न पीने के लिए बस इस प्याले में पानी है जिससे आप वुज़ू कर रहे हैं यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस प्याले में अपना हाथ रखा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उंगलियों के बीच से पानी निकलकर प्याले से बाहर गिराने लगे, तो हम लोगों ने उस पानी को लेकर पीया और वुज़ू किया। हम पानी पीने और वुज़ू करने वालों की तायदाद उस दिन 1400 थी।

(बिदाया, 6, 96, इब्ने साद, 1, 179)

हज़रत अरबाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि जब हम लोगों की जमाअत तबूक में थी, तो एक रात हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास देर से पहुंचे। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ वाले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम रात का खाना खा चुके थे। इतने में हज़रत जआल बिन सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन माक़िल मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु भी कहीं से आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम तीनों को खाने के लिए हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, कुछ खाने को है? हज़रत बिलाल रज़ि० ने एक थैले को झाड़ा जिसमें सात खजूरें निकल आईं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन सातों खजूरों को एक प्याले में रखा और प्याले पर अल्लाह का नाम लेते हुए हाथ फेरा, फिर हम लोगों से कहा, अल्लाह का नाम लेकर खाओ, हम लोगों ने खजूरें खाना शुरू कीं, मैं गिनता जा रहा था

और गुठलियों को दूसरे हाथ में पकड़ता जा रहा था। मैंने 54 खजूरें खाईं, मेरे दोनों साथी भी मेरी ही तरह कर रहे थे, कि वे भी खजूरें गिन रहे थे, उन दोनों ने भी पचास–पचास खजूरें खाई थीं।

जब हम खा चुके, तो उस प्याले में वह सात खजूरें वैसी की वैसी ही बाक़ी थी, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिलाल रज़ि० से फ़रमाया, इन खजूरों को अपने थैले में रख दो, दूसरे दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर वह खजूरें प्याले में डाली और फ़रमाया: अल्लाह का नाम लेकर खाओ, हम दस आदमी पेट भरकर खजूरें खा गए, पर प्याले में उसी तरह सात खजूरें बची थीं।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अगर मुझे अपने रब से हया न आती, तो मदीना पहुंचने तक ये खजूरें खाते रहते, फिर मदीना पहुंचकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन खजूरों को बच्चों में तक़्सीम कर दिया।

(बिदाया, 6, 118)

हज़रत बशीर बिन साद की बेटी ने बताया कि एक दिन मेरी मां ने मुट्ठी भर खजूरें थैली में डालकर दी और कहा उन्हें अपने अब्बा (बशीर) और मामू (अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु) को दोपहर में खाने के लिए दे आओ।

मैं वे खजूरें लेकर मामूं और अब्बा को ढूंढते हुए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीब से गुज़री। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा इस थैली में क्या है? मैंने कहा कि खजूरें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वे खजूरें मुझसे अपने दोनों हाथों में ली, जिससे आपके दोनों हाथ भी न भर पाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कहने पर एक कपड़ा बिछाया गया, जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वे खजूरें बिखेर दी, फिर एक सहाबा रज़ि० से कहा: जाओ खंदक़ वालों को बुलाओ कि वे लोग आकर खजूरें खा लें, एलान पर सारे खंदक़ वाले जमा हो गए और खजूरें खाने लगे, वे खजूरें बढ़ती चली जा रही थीं, जब वे सारे लोग खाकर चले गए, तो खजूरें कपड़े से बाहर तक गिर रही थीं।

(दलाइल, सफ़ा, 180, बिदाया, 6, 116)

बद्र की लड़ाई में हज़रत उकाशा बिन मुहसिन रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार टूट गई, यह देखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पेड़ की एक टहनी पकड़ा दी हज़रत उकाशा रज़ि० के टहनी पकड़ते ही अल्लाह तआला उस टहनी को तलवार में बदल दिया, जिसका लोहा बड़ा साफ़ और मज़बूत था।

(इब्ने साद, 1, 188)

हज़रत समरा बिन जन्दब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे, कि इतने में सरीद का एक प्याला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसमें से खाया और जो लोग वहां पर मौजूद थे उन सबने भी खाया, जुहर तक लोग बारी-बारी आते रहे और इसमें से खाते रहे। एक आदमी ने हज़रत समरा रज़ि० से पूछा क्या इस प्याले में कोई आदमी और सरीद डाल जाता था? हज़रत समरा रज़ि० ने फ़रमाया ज़मीन से तो लाकर नहीं डाला जाता था, अलबत्ता आसमान से ज़रूर डाला जा रहा था।

(बिदाया, 2, 112, दलाइल सफ़ा 153)

हज़रत वासिला बिन अस्क़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से था, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे रोटी का टुकड़ा मंगवाया और उसके छोटे छोटे टुकड़े करके प्याले में डाल दिए फिर उस प्याले में गर्म पानी और चर्बी डालकर उसे अच्छी तरह मिलाया।

फिर उसकी ढेरी बनाकर बीच में ऊंचा करके मुझसे फ़रमाया, जाओ अपने समीत दस आदमियों को मेरे पास बुलाओ। मैं दस आदमियों को बुला लाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: खाओ! लेकिन अपने आगे से खाना, बीच से न खाना। क्योंकि बरकत ऊपर से बीच में उतरती है। चुनांचे हम सब ने इसमें से पेट भरकर खाया।

(हैसमी, 8, 305, दलाइल सफ़ा, 150)

हज़रत अब्बास बिन सहल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक सुबह लोगों के पास पानी बिल्कुल नहीं था। लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह बात बतलाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की, तो अल्लाह तआला

ने एक बादल उसी वक़्त भेजा जो ख़ूब ज़ोर से बरसा, लोग सेराब हो गए। फिर सबने अपनी ज़रूरतें पूरी कीं और बर्तनों में भी भर लिया।

(दलाइल सफ़ा, 190)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी काम के लिए दो सहाबी रज़ि० को बाहर भेजा। जाते वक़्त उन दोनों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया कि हम लोगों के पास रास्ते के लिए कुछ नहीं है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक मश्क़ ढूंढ कर लाओ। वह एक मश्क लेकर आए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इसे भर दो! उन्होंने उसे पानी से भर दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मश्क़ का मुंह रस्सी से बांधा और उन्हें देकर फ़रमाया, जब तुम लोग चलते चलते फ़लां जगह पर पहुंचोगे तो वहां अल्लाह तआला तुम्हें ग़ैब से रोज़ी देंगे। चुनांचे वे दोनों चल पड़े, जब चलते–चलते ये दोनों उस जगह पहुंचे, जहां के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था, तो उनके मश्क़ का मुंह अपने आप खुल गया उन्होंने देखा कि मश्क़ में पानी की जगह दूध और मक्खन भरा हुआ है, फिर इन लोगों ने पेट भरकर मक्खन खाया और दूध पीया। (इब्ने साद, 1, 174)

जन्नत और दोज़ख़ की सेर

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सुबह इर्शाद फ़रमाया, पिछली रात मेरे अल्लाह ने मुझको ख़ास इज़्ज़त और बुज़ुर्गी से नवाज़ा, कि पिछली रात जब मैं सो रहा था, रात के एक हिस्से में जिब्रील आए और मुझको जगाया। मैं पूरी तरह जाग भी न पाया था, कि मुझको हरम काबा में उठा लाए। वहां जिब्रील ने मेरी सवारी के लिए ख़च्चर से कुछ छोटा जानवर बुराक़ पेश किया, जो सफ़ेद रंग का था।

जब मैं उस पर सवार होकर चला, तो उसकी धीरी रफ़्तार का हाल यह था, कि जहां तक मुझे नज़र आता था उसका पहला क़दम वहां पड़ता था अचानक हम लोग बैतुलमक़दस जा पहुंचे, यहां जिब्रील के इशारे पर हमने बुराक़ को उस जगह खड़ा कर दिया, जिस जगह बनी इसराइल के नबी अपनी सवारियां खड़ी किया

करते थे।

फिर मैं मस्जिद अक़्सा में दाख़िल हुआ और दो रकआत नमाज़ पढ़ी। फिर अर्श पर जाने की तैयारी शुरू हुई। उसके बाद अर्श का सफ़र शुरू हुई और जिब्रील के साथ बुराक़ ने आसमान की तरफ़ उड़ान भरी, जब हम पहले आसमान तक पहुंच गए तो जिब्रील ने आसमान का दरवाज़ा खोलने के लिए फ़रिश्ते से कहा।

दरवाज़े पर मुक़र्रर फ़रिश्ते ने पूछा, कौन है?

जिब्रील ने कहा, मैं जिब्रील हूं

फ़रिश्ते ने पूछा, तुम्हारे साथ कौन है?

जिब्रील ने जवाब दिया मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

फ़रिश्ते ने पूछा, क्या उन्हें ऊपर बुलाया गया है?

जिब्रील ने कहा, बेशक। फिर फ़रिश्ते ने दरवाज़ा खोला और दरवाज़ा खोलते हुए मुझसे कहा, कि आप जैसी हस्ती का यहां आना मुबारक हो। जब हम अंदर दाख़िल हुए तो, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा, यह आपके बाप आदम अलैहिस्सलाम हैं। आप इनको सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब देते हुए कहा कि 'मरहबा नेक बेटे और नेक नबी' इसके बाद दूसरे आसमान पर पहुंचे तो पहले आसमान की तरह सवालों का जवाब देकर दरवाज़े में दाख़िल हुए, तो वहां हज़रत यहया और ईसा अलै० से मुलाक़ात हुई। तो जिब्रील ने उनका तारूफ़ कराया कि सलाम में पहल कीजिए, मैंने सलाम किया और उन दोनों ने जवाब देते हुए फ़रमाया, मुबारक हो 'ऐ बुर्गज़ीदा नबी।

इसके बाद चौथे आसमान पर भी इन्हीं सवालों के बाद हज़रत इदरीस अलै० से मुलाक़ात हुई और पांचवे आसमान हज़रत हारून अलै० से और छठे आसमान पर मूसा अलै० से इसी तरह मुलाक़ात हुई।

लेकिन जब मैं वहां से सातवें आसमान की तरफ़ जाने लगा तो हज़रत मूसा अलै० रंजीदा हो गए। जब मैंने इसकी वजह पूछी तो फ़रमाया, मुझे यह रश्क हुआ कि अल्लाह तआला की ज़ोरदार हिक्मत ने ऐसी हस्ती को (जो मेरे बाद दुनिया में भेजी गई) यह शर्फ़ दे दिया, कि उसकी उम्मत मेरी उम्मत के मुक़ाबले में कई

गुना जन्नत का फ़ैज़ हासिल करेगी।

इसके बाद पिछले सवालों और जवाबों का सिलसिला तैय करके जब मैं सातवें आसमान पर पहुंचा, तो हज़रत इब्राहीम अलै० से मुलाक़ात हुई जो बैतुल मामूर से पीठ लगाए हुए बैठे थे। जिसमें हर दिन सत्तर हज़ार (70,000) नए फ़रिश्ते (इबादत के लिए) दाख़िल होते हैं। हज़रत इब्राहीम अलै० ने मेरे सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया 'मुबारक मेरे बेटे और बुर्गज़ीदा नबी' यहां से फिर मुझे 'सदरतुल मुन्तहा' तक पहुंचाया गया, जिसका फल झरबेर के गुठलियों के बराबर है और जिसके पत्ते हाथी के कान की तरह चौड़े हैं। इस पर अल्लाह के ला–तादाद फ़रिश्ते जूगनू की तरह चमक रहे थे और अल्लाह की ख़ास तजल्ली ने उनको हैरत नाक तौर पर रोशन और कैफ़ वाला बना दिया।

(मुस्लिम, बुख़ारी)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के ग़ैबी मददों के वाक़िआत

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक दिन, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर में तशरीफ़ लाए, मैं आपके चेहरे के आसार देखकर समझ गई, कि आज कोई अहम बात पेश आई है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घर में वुज़ू फ़रमाया और किसी से कोई बात किए बग़ैर मस्जिद में चले गए, मैं हुजरे की दीवार से कान लगाकर खड़ी हो गई, कि सुनूं! आप क्या इर्शाद फ़रमाते हैं? आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और बयान फ़रमाया: ऐ लोगो! अल्लाह तआला का इर्शाद है, कि अमल बिल मारूफ़ (अच्छी बातों का हुक्म) और नहीं अनिल मुन्कर (बुरी बातों से रोकना) करते रहो। (अल्लाह की पहचान कराते रहो और अल्लाह के ग़ैर से कुछ नहीं होता है, इसे समझते रहो) अगर तुमने ऐसा न किया,

1. तो, मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल नहीं करूंगा।
2. तुम मुझसे सवाल करोगे, तो मैं तुम्हारे सवालों को पूरा नहीं करूंगा।

3. तुम अपने दुश्मनों के ख़िलाफ़ मुझसे मदद तलब करोगे, तो मैं तुम्हारी मदद न करूंगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह बयान फ़रमा कर मिम्बर से नीचे तश्रीफ़ ले आए।

(इब्ने माजा)

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं हिजरत करके मदीना जा रही थी मनसरफ़ नाम की जगह पर पहुंची तो शाम हो गई थी, रोज़े से थी लेकिन हमारे पास पानी नहीं था और प्यास के मारे बुरा हाल था, तो आसमान से सफ़ेद रस्सी में पानी से भरा हुआ डोल उतरा, उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैंने उस डोल से ख़ूब पानी पिया, फिर उस दिन के बाद से मुझे कभी प्यास नहीं लगी। हालांकि मैं तेज़ गर्मियों में रोज़े रखती थी ताकि मुझे प्यास लगे। लेकिन मुझे प्यास नहीं लगती थी।

(इसाबा, 4, 432, तबक़ात इब्ने साद, 8, 224)

हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु की जमाअत बहरीन गई हुई थी सफ़र में पानी नहीं था। जिसकी वजह से ऊंट भी प्यास के मारे क़ाफ़िले से भाग गए और उन पर जो सामान और खाना बंधा हुआ था, उससे भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम महरूम हो गए। सारी जमाअत प्यास से परेशान हो गई, तो तयम्मुम करके सब ने नमाज़ पढ़ी और नमाज़ पढ़कर अल्लाह से पानी का इंतिज़ाम करने की दुआ की, ये लोग दुआ कर ही रहे थे, कि पीछे से पानी उबलने की आवाज़ सुनी। जब पीछे पलट कर देखा, तो ज़मीन से एक चश्मा फूटकर पानी की धार बह रही थी और जो जानवर सामान लेकर चले गए थे, वे सब भी एक साथ वापस आ रहे थे, जैसे उन्हें कोई पकड़ कर ला रहा हो।

(बैहक़ी, बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु को दस लाख (10,00,000) दिरहम के बदले में एक ज़मीन मिली, जो बंजर थी, उन्होंने अपने गुलाम से मुसल्ला लेकर उस ज़मीन पर चलने को कहा। ज़मीन पर पहुंचकर गुलाम से मुसल्ला बिछाने को कहा। फिर मुसल्ले पर खड़े होकर दो रकअत नमाज़ पढ़ी, सज्दे में

बहुत देर तक पड़े रहे, फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होकर, गुलाम से कहा, कि मुसल्ला उठाकर वहां की ज़मीन खोदो। जब गुलाम ने वहां की ज़मीन खोदी, तो पानी का एक चश्मा वहां से उबलने लगा।

(फ़ज़ाइले आमाल)

एक मर्तबा हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के गुलाम ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से बाग़ और खेत में पानी न होने की शिकायत की। तो हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे पानी मांगा और वुज़ू किया, फिर दो रकआत नमाज़ पढ़ी और गुलाम से कहा, कि बाहर जाकर देखो, क्या आसमान से बादल आया? उसने बाहर देखकर बताया कि बादल तो नहीं है। जिस पर हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने दोबारा, तीसरी, और चौथी मर्तबा नमाज़ पढ़कर गुलाम से कहा कि अब जाकर देखो। इस बार गुलाम ने आकर बताया, कि हां चिड़िया के पर के बराबर एक बादल नज़र आ रहा है। यह सुनकर उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी और खूब देर तक दुआ करते रहे, फिर गुलाम ने बताया कि ख़ूब बारिश हो रही है। तो आपने उसे अपना घोड़ा देकर कहा, कि जा देखकर आ, कहां तक बारिश हुई? वह गया और वापस आकर उसने बताया, कि अपने बाग़ और खेत के अलावा कहीं बारिश नहीं हुई है।

(तब्क़ात इब्ने साद)

चूहे के बिल से रिज़्क़

एक दिन हज़रत मिक्दार रज़ियल्लाहु अन्हु ज़रूरत पूरी करने के लिए अपने घर से चले और एक बे-आबाद जगह पर ज़रूरत पूरी करने के लिए बैठ गए, इतने में एक बड़ा सा चूहा एक दीनार अपने मुंह में दबाए हुए आया और उनके सामने उसे डालकर वापस चला गया। एक-एक करके उस चूहे ने सत्तर (70) दीनार उनके सामने लाकर रखे।

हज़रत मिक्दार रज़ियल्लाहु अन्हु वे दीनार लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरा वाक़िआ बताया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा, कि तुमने चूहे के बिल में अपना हाथ तो नहीं

डाला था?

हज़रत मिक्दार रज़ि० ने जवाब दिया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैंने उसके बिल में अपना हाथ नहीं डाला था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसे ले लो, ये अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें रोज़ी भेजी गई है, जिसका तुमसे वायदा किया गया है, कि तुम्हें ऐसी जगह से रोज़ी दूंगा, जहां से तुम्हें गुमान भी न होगा।

उनकी बीवी हज़रत ज़बाआ रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं, कि अल्लाह तआला ने उन दीनारों में बहुत बरकत फ़रमाई, यह उस वक़्त तक ख़त्म नहीं हुए, जब तक कि हमारे घर में चांदियों के दिरहम बोरियों में भरकर नहीं रखे जाने लगे।

(दलाइल, सफ़ा, 165)

तीन दीनार का माल, वह भी सदक़ा कर दिया

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु दूसरों पर ख़र्च करने के लिए घर पर पैसे रखते थे। कभी किसी मांगने वाले को ख़ाली हाथ वापस नहीं करते थे। अगर पैसे नहीं होते, तो उसे एक प्याज़ या एक खजूर दे देते थे। एक दिन एक मांगने वाला उनके पास आया, उनके पास सिर्फ़ तीन दीनार थे, एक दीनार उसको दे दिया, कुछ देर बाद दूसरा मांगने वाला आया, एक दीनार उसको दे दिया, फिर थोड़ी देर बाद तीसरा आया उन्होंने वह भी उठाकर उसको दे दिया।

उनकी ईसाई बांदी ने जब आकर देखा तो उसे बहुत गुस्सा आया और उसने गुस्से में कहा कि तुमने हमारे खाने के लिए कुछ नहीं छोड़ा, उन्होंने उसकी बात सुनी और आकर लेट गए, जब जुहर की आज़ान हुई, तो यह उठे और वुज़ू करके मस्जिद चले गए, यह रोज़े से थे। इसी वजह से उनकी बांदी को उन पर तरस आ गया और गुस्सा उतर गया, वह बांदी कहती है, मैंने उधार लेकर, उनके लिए रात का खाना पकाया और घर में चिराग़ जलाने के लिए उनके बिस्तर के पास गई, जब बिस्तर उठाया तो उसके नीचे सोने के दीनार रखे हुए थे। मैंने उन्हें गिना तो वे पूरे 300 थे। मैंने सोचा कि इतने दीनार यह अपने पास रखे हुए थे। इसलिए वे तीन दीनार मांगने वाले को दे दिए। जब इशा की नमाज़ के बाद वह घर वापस

आए तो चिराग़ की रोशनी में दस्तरख़्वान लगा देखा, उसे देखकर मुस्कराया और कहने लगे मालूम होता है कि अल्लाह के यहां से आया है? यह सुनकर मैं कुछ न बोली, उनको खाना खिलाया, फिर खाना खाने के बाद मैंने उनसे कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, आप अगर मुझे जाते वक़्त इन दीनारों के बारे में मुझे बता देते, तो मैं इन दीनारों को उठाकर रख लेती।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा कौन से दीनार? मेरे पास तो कुछ नहीं था जिसे मैं छोड़कर जाता। तो मैंने बिस्तर उठाकर वे दीनार दिखाए। इन दीनारों को देखकर वह ख़ुश भी हुए और हैरान भी हुए। इनकी इस ख़ुशी और हैरानी को देखकर मुझ पर बड़ा असर हुआ, मैंने अपना ज़ुन्नार काट डाला और मुसलमान हो गई।

(हुलीया, 10, 149)

हज़रत साइब बिन अक़राअ़ रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदाइन का गवर्नर बनाया। एक बार वह किसरा के दरबार में बैठे हुए थे, जहां उनकी नज़र दीवार पर बनी हुई ऐक तस्वीर पर पड़ी, जो उंगली से एक तरफ़ इशारा कर रही थी।

हज़रत साइब बिन अक़राअ़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि यह किसी खज़ाने की तरफ़ इशारा कर रहे है, मैंने उस जगह को खोदा तो बहुत बड़ा खज़ाना वहां से निकला। मैंने ख़त लिखकर हज़रत उमर रज़ि० को खज़ाना मिलने की ख़बर की और यह भी लिखा कि यह खज़ाना अल्लाह ने मुझे बग़ैर किसी मुसलमान की मदद के दिया है। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब में लिखा कि बेशक यह खज़ाना तुम्हारा है, लेकिन तुम मुसलमानों के अमीर हो इसलिए इसे मुसलमानों में बांट दो।

(इसाबा, 2)

उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के यहां एक दिन हदिया में एक प्याला गोश्त आया। उन्होंने उस गोश्त के प्याले को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खाने के लिए, अपनी बांदी से रखवा दिया। उसी वक़्त बाहर मांगने वाला आया। तो उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उसे आगे जाने को कहा, तो वह चला गया। इतने में

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गए, तो उम्मे सलमा ने अपनी बांदी से वह गोश्त का प्याला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खाने के लिए मांगा, बांदी जब प्याला लेकर आई, तो उन्होंने देखा, कि इस गोश्त को अल्लाह तआला ने पत्थर में बदल दिया था।

(फ़ज़ाइले सदक़ात)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अल्लाह के रास्ते में गए, मुझ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, ऐ अबू हुरैरा! तुम्हारे पास खाने को कुछ है? मैंने कहा, जी हां, कुछ खजूरें थैली में है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा उन्हें ले आओ मैंने वे खजूरें ले जाकर आपको दे दी। फिर फ़रमाया: दस आदमियों को बुला लाओ, मैं दस आदमियों को बुला लाया। सब ने पेट भरकर खजूरें खाई। इसी तरह दस आदमी आते रहे और खाते रहे। यहां तक कि सारे जमाअत ने वे खजूरे खाई। फिर भी थैली में खजूरें बची रहीं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, एक अबू हुरैरा! ज़ब तुम खजूरें खाना चाहो, तो थैली में हाथ डालकर निकाल लिया करना। पर इस थैली को कभी उलटना नहीं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी ज़िंदगी उस थैली से खजूरें निकालकर खाता रहा। फिर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िंदगी उस थैली से निकालकर खाता रहा, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िंदगी खाता रहा, आख़िर में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िंदगी में इसी थैली से खजूरें खाता रहा। जिस दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया, उस दिन की भगदड़ में मेरी थैली कहीं गुम हो गई। अपने शार्गिदों से फ़रमाया, कि तुम लोगों को बताओ मैंने (लगभग बीस साल में) इसमें से कितनी खजूरें खाई हैं? लोगों ने कहा बताइए, हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया दो सौ वसक़, यानी 1050 मन, (लगभग 425 कोंटल)

(बिदाया, 6, 117, दलाइल, सफ़ा, 155)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम से गल्ला मांगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आधा वसक (लगभग एक क्वींटल) जौ उसे दे दिया। वह आदमी और उसकी बीवी और उसका गुलाम, ये तीनों बहुत दिनों तक उस जौ को खाते रहे। लेकिन एक दिन उसने उस गल्ले को तौल लिया। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसके जौ तौलने का इल्म हुआ, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस आदमी को बुलाकर फ़रमाया, अगर तुम लोग उसे तौलते न, तो हमेशा खाते रहते, वह जौ कभी ख़त्म न होता।

(बिदाया, 6, 104)

हज़रत उम्मे शुरीक दौसिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने हिजरत की, रास्ते में एक यहूदी का साथ हो गया, वह रोज़े से थीं और शाम हो चुकी थी, उनके पास खाने पीने को कुछ न था। उस यहूदी ने अपनी बीवी से कहा, कि तुम इस मुसलमान को पानी न देना, वरना तुम्हारी ख़ैरियत नहीं। उम्मे शरीक रज़ि० प्यासी ही सो गई। तहज्जुद के वक़्त अल्लाह तआला ने एक पानी से भरा हुआ ढोल और थैला आसमान से उतारा, जिस ढोल से उन्होंने ख़ूब पानी पीया।

(इब्ने साद, 8, 157)

कुप्पी से घी पलटने के बाद भी कुप्पी भरी रही

एक मर्तबा हज़रत उम्मे शरीक रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी बांदी को घी देकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां भेजा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस कुप्पी से अपने बर्तन में घी पलट लिया और उस ख़ाली कुप्पी को बांदी के हवाले करके फ़रमाया, इस कुप्पी को घर जाकर लटका देना और इसका मुंह बंद न करना।

कुछ देर बाद उम्मे शरीक रज़ि० ने देखा कि कुप्पी उसी तरह से भरी हुई लटक रही है, उन्होंने बांदी को बुलाकर डांटा, कि मैंने तुझसे यह कुप्पी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां ले जाने को कहा था, इसे क्यों नहीं पहुंचाया? बांदी ने कहा मैं इसका घी दे आई थी।

यह सुनकर उम्मे शरीक रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास

गई और जाकर सारी बात बताई, उनकी बात सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह ने तुम्हें बहुत जल्द बदला दे दिया। उम्मे शरीक! इस कुप्पी का मुंह कभी बंद न करना।

चुनांचे बहुत दिनों तक उनके घर वाले उसका घी खाते रहे। एक बार भूल से उम्मे शरीक ने उस कुप्पी का मुंह बंद कर दिया। पस उसी रोज़ से उस कुप्पी का घी कम होने लगा और एक दिन ख़त्म हो गया।

(इब्ने साद, 8, 157)

एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के घर तशरीफ़ ले गए। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से पूछा क्या तुम्हारे यहां खाने को कुछ है? हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, कि मेरे यहां खाने को तो कुछ नहीं है।

यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस चले गए, कुछ देर बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की पड़ोसन ने दो रोटियां और एक टुकड़ा भुना हुआ गोश्त भेजा। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने वह लेकर रख दिया और अपने बेटे से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुलाने को कहा।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोबारा तशरीफ़ लाए, तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने उनसे कहा, कि अल्लाह ने खाने को कुछ भेज दिया है, इसलिए मैंने आपको बुलाया है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ले आओ, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० फ़रमाती हैं, कि जब मैं इस प्याले को लाई और खोल कर देखा, तो मैं हैरान रह गई, क्योंकि सारा प्याला गोश्त और रोटियों से भरा हुआ था। मैं समझ गई, कि अल्लाह ने बरकत दी, मैंने वह सारा खाना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने रख दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खाने को देखकर मुझसे पूछा ऐ बेटी! तुम्हें यह खाना कहां से मिला? मैंने कहा ऐ अब्बा जान! यह खाना ऊपर अल्लाह के यहां से आया है। यह जवाब सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ बेटी! तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने तुम्हें मरयम अलै० के मुशाबा बनाया है।

क्योंकि अल्लाह तआला जब उन्हें आसमानों से रोज़ी भेजते थे, फिर उनसे जब इस रोज़ी के बारे में पूछा जाता, तो वह भी यही जवाब देती थीं, कि अल्लाह

तआला ने आसमानों के ऊपर से भेजा है।

(तफ़्सीरे इब्ने कसीर, 1, 360)

हज़रत उम्मे मालिक रज़ि० अपनी कुप्पी में घी रखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हदिया में भेजा करती थीं। एक बार उनके बेटे ने सालन मांगा, उस वक़्त उनके घर में कुछ न था। वह अपनी उस कुप्पी के क़रीब गईं, जिस कुप्पी में घी रखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भिजवाती थीं। उस कुप्पी में उन्हें घी मिल गया। हालांकि उसे खाली करके लटकाया था। अपने बेटों को बहुत अर्से तक सालन की जगह उस कुप्पी से घी निकालकर खिलाती रहीं।

आख़िर एक बार उन्होंने उस कुप्पी को निचोड़ लिया फिर उसमें से घी निकलना बंद हो गया। उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाकर सारा वाक़िआ बताया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा तुमने उसे निचोड़ा था? उन्होंने कहा, जी हां। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर तुम उसे न निचोड़ती तो तुम्हें हमेशा उसमें से घी मिलता रहता।

(बिदाया, 6, 104)

हज़रत उम्मे ऐवस रज़ि० ने घी को पकाकर अपनी कुप्पी में डाला और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हदिए में दे दिया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह घी अपने बर्तन में डालकर, उन्हें कुप्पी वापस करते हुए बरकत की दुआ दी।

उन्होंने घर जाकर देखा कि वह कुप्पी घी से भरी हुई है, वह समझी कि शायद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हदिया क़बूल नहीं किया है। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वापस आईं और अर्ज़ किया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हदिया क़बूल क्यों नहीं किया? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, कि मैंने तो हदिया क़बूल कर लिया था, यह तो अल्लाह ने बरकत फ़रमाई है कि तुम्हारी कुप्पी घी से भर गई।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी ज़िंदगी वह इस कुप्पी से घी निकाल निकालकर खाती रहीं। फिर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि० हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िलाफ़त तक वह उस कुप्पी से घी खाती रहीं।

फिर जब हज़रत अली रज़ि० और हज़रत मुआविया रज़ि० में इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ, तो वक़्त वह उसी से घी खाती थीं। (लगभग 21 साल हो चुके थे पर घी कुप्पी से ख़त्म नहीं हुआ)

(इसाबा, 4, 431, हैसमी, 8, 310)

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी मुंह बोली बेटी के हाथ, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घी भिजवाया। वह लड़की देकर आई और कुप्पी को घर में लाकर लटका दिया। उम्मे सुलैम रज़ि० उस वक़्त अपने घर में नहीं थी जब वह घर में लौटीं, तो कुप्पी से घी टपकता देखकर अपनी बेटी से कहा, मैंने तुम से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घी भिजवाया था, तो वापस क्यों ले आई? लड़की ने कहा, घी तो मैं दे आई हूं, अगर आपको मेरी बात पर इत्मिनान न हो, तो आप ख़ुद जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछ लें। हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० उस लड़की को साथ लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गईं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैंने इसके हाथ आपको घी भिजवाया था, यह कह रही है, कि इसने आपको घी दे दिया है, लेकिन कुप्पी घर में घी से भरी टपक रही है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि हां....यह मेरे पास आकर मुझे घी तो दे गई है, अब तुम ताज्जुब इस बात पर कर रही हो, कि वह ख़ाली कुप्पी घी से कैसे भर गई?!!अरे......अल्लाह अब तुम्हें खिला रहे हैं, तो इसमें से अब तुम भी खाओ और दूसरों को भी खिलाओ।

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० फ़रमाती हैं, कि मैं घर वापस आई और उस घी को थोड़ा सा अपने पास रखकर बाक़ी का सारा तक़्सीम कर दिया। हमने अपने बचे हुए घी को सालन की जगह पर एक या दो महीना इस्तेमाल किया।

(बिदाया, 6, 103, दलाइल, सफ़ 204, इसाबा, 4, 320)

एक दिन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, मुझे आपकी वजह से लोगों को बुरा भला कहना पड़ता है। जब तब आप कोई ऐसी बात ज़बान से निकाल देते हैं। कि लोगों को बोलने का मौक़ा मिल जाता है। जैसे आज आपने ख़ुत्बा देते हुए ज़ोर से कहा, ऐ सारिया!

पहाड़ की तरफ़ हो जाओ। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं अपने आपको क़ाबू में न रख सका, मैंने देखा, कि सारिया की जमाअत एक पहाड़ के पास लड़ रही है और हर तरफ़ से उन पर हमला हो रहा है, उस पर मैं अपने आपको न रोक सका और बोल पड़ा कि 'ऐ सारिया!' पहाड़ की तरफ़ हो जाओ। (ताकि सिर्फ़ सामने से लड़ना पड़े)।

कुछ दिन बाद हज़रत सारिया रज़ि० का क़ासिद ख़त लेकर आया, जिसमें लिखा था, कि जुम्आ के दिन हम लोगों को जब दुश्मन ने घेर लिया था, तो उस वक़्त मुझे यह आवाज़ सुनाई पड़ी कि 'सारिया!' पहाड़ की तरफ़ हो जाओ! मैं आवाज़ सुनकर अपने साथियों समेत पहाड़ की तरफ़ हो गया। फिर हम लोगों ने दुश्मन को हरा भी दिया और उन्हें क़त्ल भी किया (सारिया रज़ि० की जमाअत मदीने से लगभग 500 किलोमीटर दूर दुश्मन से घिरी थी, जहां यह आवाज़ पहुंची थी)

(दलाइल, सफ़ा, 210)

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर और एक अंसारी सहाबी रज़ि० एक रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे, ये लोग अपनी किसी ज़रूरत के बारे में बातें कर रहे थे, जब वहां से उठकर अपने घर आने लगे, तो बहुत रात हो चुकी थी, बाहर बहुत अंधेरा था।

इन दोनों लोगों के हाथ में एक एक छोटी लाठी थी, तो इनमें से एक की लाठी से यकायक (टार्च की तरह) रोशनी निकलने लगी, जिसकी रोशनी में यह दोनों चलते हुए एक दोराहे पर पहुंचे, जहां से दोनों को अलग होना था। तो दूसरे सहाबी की लाठी से भी रोशनी निकलने लगी और ये दोनों अपनी-अपनी लाठी की रोशनी में अपने घरों को पहुंच गए।

(बिदाया, 6, 152, इब्ने साद, 3, 606)

हज़रत हमज़ा बिन अम्र अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि हम एक सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे, सख़्त अंधेरी रात थी, इसमें हम लोग इधर-उधर बिखर गए, तो हमारी उंगलियों से रोशनी निकलने लगी, मेरी उंगलियों की उस रोशनी से लोगों ने अपनी-अपनी सवारी और गिरे हुए सामान

को जमा किया, जब कहीं जाकर मेरी उंगलियों से रोशनी ख़त्म हुई।

(बिदाया, 8, 213, हैसमी, 9, 413)

हज़रत अबू हफ़्ज़ फ़रमाते हैं, हम तमाम नमाज़ें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पढ़ा करते थे। फिर अपने मुहल्ले बनू हारिस वापस हो जाते थे, एक रात सख़्त अंधेरा था और बारिश भी हो चुकी थी, हम लोग मस्जिद से निकले, तो मेरी लाठी से रोशनी निकलने लगी, उस रोशनी में चलकर हम अपने मुहल्ले में पहुंचे।

(हाकिम, 3, 350)

हज़रत अम्र बिन अबसा रज़ि० एक सफ़र में गए, वहां जब यह अपना ऊंट चराने जाते, तो दोपहर के वक़्त, बादल आकर उन पर साया कर लेता। यह जिधर जाते, बादल भी उधर चल देता।

(इसाबा, 3, 6)

हज़रत अब्बास बिन सहल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक सुबह लोगों के पास पानी, बिल्कुल नहीं था, लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात बतलाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की, तो अल्लाह तआला ने एक बादल उसी वक़्त भेजा, जो ख़ूब ज़ोर से बरसा, लोग सैराब हो गए, फिर सबने अपनी ज़रूरतें पूरी कीं और बर्तनों में भी भर लिया।

(दलाइल, सफ़ा, 190)

एक क़बीला को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ दी थी, कि जब भी इस क़बीले का कोई आदमी इंतिक़ाल करेगा, तो उसकी क़ब्र पर एक बादल आकर ज़रूर बरसेगा।

एक बार उस क़बीले के आज़ाद किया हुआ एक गुलाम का इंतिक़ाल हुआ, तो मुसलमानों ने कहा, आज हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फ़रमान को भी देख लेंगे, कि क़ौम का आज़ाद किया हुआ गुलाम, क़ौम वालों में से ही गिना जाता है। चुनांचे जब इस गुलाम को दफ़न किया गया, तो एक बादल आकर इसकी क़ब्र पर बरसा।

(कंज़, 7, 136)

हज़रत मालिक अशजयी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने बेटे औफ़ के क़ैद हो जाने के बारे में बतलाया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसके पास यह ख़बर भेज दो–

"لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ"

को कसरत से पढ़ें।

चुनांचे क़ासिद ने जाकर हज़रत औफ़ रज़ि० को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह पैग़ाम पहुंचा दिया। हज़रत औफ़ रज़ि० ने ख़ूब कसरत से इसे पढ़ना शुरू कर दिया, तो काफ़िरों ने उनके हाथ को जिस चमड़े की डोरी से बांधा था, वह डोरी टूट कर गिर गई, हज़रत औफ़ रज़ि० क़ैद से बाहर निकल आए। बाहर आकर उन्होंने देखा, कि उन लोगों की एक ऊंटनी वहां मौजूद है हज़रत औफ़ रज़ि० उस पर सवार होकर चल दिए। आगे जाकर देखा, कि उन काफ़िरों के सारे जानवर एक जगह पर जमा हैं। उन्होंने जानवरों को आवाज़ लगाई, तो सारे जानवर उनके पीछे चल पड़े।

जब वह मदीना पहुंचे और अपने घर के सामने जाकर ऊंटनी से उतरे, तो सारा का सारा मैदान उनके साथ आए हुए ऊंटों से भर गया। उनके वालिद उनको लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचे और सारा वाक़िआ बताया, जिस पर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया, तुम्हारे साथ आए हुए सारे ऊंट तुम्हारे हैं, उनको जो चाहे करो– फिर यह आयत नाज़िल हुई–

﴿وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا﴾

'जो सिर्फ़ अल्लाह तआला से डरता है, अल्लाह तआला उसके लिए नुक़सानों से निजात की शक्ल निकाल देते हैं। और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाते हैं, जहां से उसको गुमान भी नहीं होता और जो आदमी अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करेगा, अल्लाह तआला उसके लिए काफ़ी है।'

(सूरः तलाक़, 3) (कंज़, 7, 59)

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं 'रूहा' नाम की जगह के गिरजाघर (इसाइयों की इबादत करने की जगह का नाम है) में सो रहा था, वह गिरजाघर अब मस्जिद बन चुकी है और उसमें नमाज़ भी पढ़ी जाती है। जब मेरी आंख खुली तो मैंने देखा कि एक शेर मेरी तरफ़ आ रहा था। मैं घबराकर अपने हथियारों की तरफ़ लपका, तो शेर ने मुझसे इंसान की आवाज़ में कहा, कि ठहर जाओ! मुझे तुम्हारे पास एक पैग़ाम देकर भेजा गया है, ताकि तुम उसे आगे पहुंचा दो। मैंने कहा, तुम्हें किसने भेजा है? उसने कहा, अल्लाह तआला ने मुझे आप के पास इसलिए भेजा है, ताकि आप हज़रत मुआविया रज़ि० को बता दें, वह जन्नत वालों में से हैं, मैंने कहा, यह मुआविया रज़ि० कौन हैं? उसने कहा हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० के बेटे।

(हैसमी, 9, 357)

हज़रत सफ़ीना रज़ि० फ़रमाते हैं, कि मैं एक समुंद्र में सफ़र कर रहा था हमारी नांव टूट गई और हम बहते हुए जंगल में पहुंच गए हमें आगे रास्ता नहीं मिल रहा था, एक दम से मेरे सामने शेर आया, मैंने शेर से कहा, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सहाबी सफ़ीना हूं, मैं रास्ता भटक गया हूं, मुझे रास्ता बताओ।

यह सुनकर वह मेरे आगे-आगे चल पड़ा और चलते-चलते हमें रास्ते पर पहुंचा दिया, फिर उसने मुझे ज़रा धक्का दिया गोया कि वह मुझे रास्ता दिखला रहा है।

(बिदाया, 67, 149)

जमाअत के लिए जंगल, दरिंदों से ख़ाली हो गया

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी जमाअत के साथ जंगल में सफ़र कर रहे थे, कि शाम हो गई, तो अपने साथियों से कहा, यहां खेमा लगा लो! साथियों ने जंगल के जानवरों का उज़्र बताया, यह सुनकर वह एक ऊंची जगह पर खड़े हुए और जंगल के जानवरों और कीड़े मकोड़ों को मुख़ातिब करके एलान किया, कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हैं। तुम लोगों

को यह हुक्म देते हैं, कि इस जंगल को तीन दिन के अंदर खाली कर दो, वरना तुम लोगों का शिकार कर लिया जाएगा।

हज़रत उक्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु की यह आवाज़ सुनकर, जंगल के जानवरों ने क़तार से जंगल से बाहर जाना शुरू कर दिया। और तीन दिन से पहले ही सारा जंगल जानवरों और कीड़ों मकाड़ों से खाली हो गया।

(तब्क़ात इब्ने साद, 7, 325)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त दरिया के नाम

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब मिस्र फ़त्ह कर लिया तो अजमी महीनों में से 'बोना' महीने के शुरू होने पर मिस्र वाले उनके पास आए और कहा, अमीर साहब! हमारे इस दरिय–ए–नील की एक आदत है, जिसके बग़ैर यह चलता नहीं, हज़रत अम्र रज़ि० ने पूछा वह आदत क्या है? उन्होंने कहा, जब इस महीने की बारह रातें गुज़र जाती हैं, तो हम ऐसी कुंवारी लड़की की तलाश करते हैं, जो अपने मां–बाप की इकलौती लड़की होती है। उसके मां–बाप को राज़ी करते हैं और उसे सब से अच्छे कपड़े और ज़ेवर पहनाकर उसमें डाल देते हैं, हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने कहा, यह क़ाम इस्लाम में तो हो नहीं सकता, क्योंकि इस्लाम अपने से पहले के तमाम (ग़लत) तरीक़े ख़त्म कर देता हैं चुनांचे मिस्र वाले बोना, अबीब, मिस्री तीन महीने ठहरे रहे और आहिस्ता–आहिस्ता दरिय–ए–नील का पानी बिल्कुल ख़त्म हो गया। यह देखकर मिस्र वालों ने मिस्र छोड़कर कहीं और जाने का इरादा कर लिया।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने यह देखा, तो इन्होंने इस बारे में हज़रत उमर रज़ि० को ख़त लिखा, हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में लिखा, आपने बिल्कुल ठीक किया, बेशक इस्लाम अपने पहले के तमाम ग़लत तरीक़े ख़त्म कर देता है। मैं आपको एक पर्चा भेज रहा हूं, जब आपको मेरा ख़त मिले तो आप मेरा वह पर्चा दरिय–ए–नील में डाल दें। जब ख़त हज़रत अम्र रज़ि० के पास पहुंचा तो उन्होंने वह पर्चा खोला उसमें यह लिखा हुआ था। 'अल्लाह के बंदे अमीरूल मोमिनीन उमर की तरफ़ से मिस्र के दरिय–ए–नील के नाम। अम्मा बाअद!

अगर तुम अपने पास से चलते हो तो मत चलो और तुम्हें अल्लाह वाहिद चलाते हैं, तो हम अल्लाह वाहिद से सवाल करते हैं कि वह तुझे चला दे' चुनांचे सलीब के दिन से एक दिन पहले यह पर्चा दरिया-ए-नील में डाला, उधर मिस्र वाले मिस्र छोड़ने की तैयारी कर चुके थे, क्योंकि उनकी सारी माशियत और खेती-बाड़ी का इंहिसार दरिया-ए-नील के पानी पर था। सलीब के दिन सुबह लोगों ने देखा कि दरिया-ए-नील में सोलह (16) हाथ पानी चला आ रहा है, इसी तरह अल्लाह तआला ने मिस्र वालों की इस बुरी रस्म को ख़त्म कर दिया।

(कंज़, 4, 380)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि० को बहरीन की तरफ़ भेजा, तो मैं भी उनके पीछे हो लिया। जब हम लोग समुंद के किनारे पर पहुंचे, तो हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि० ने हम लोगों से कहा कि 'बिस्मिल्लाह कह कर समुंदर में घुस जाओ' चुनांचे हम लोग बिस्मिल्लाह कह कर समुंद में घुस गए और हमने समुंद पार कर लिया और हमारे ऊंटों के पांव भी गीले नहीं हुए।

(दलायल, सफ़ा, 209, हुलीया, 1-8)

ईमान की अलामत (निशानी)

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ﴾

कि ईमान वाले तो वही हैं, जिनके सामने अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह तआला की ख़बरें उन्हें सुनाई जाती हैं, तो उन ख़बरों को सुनकर उनके यक़ीन बढ़ जाते हैं और वे लोग सिर्फ़ अपने रब पर ही तवक्कुल (भरोसा) करते हैं

(सूर अंफ़ाल, 2)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया, कि ईमान क्या है?